शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2014

साहित्यिक अनुसंधान

डॉ.मंजु तिवारी
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय,
भोपाल, म.प्र., भारत

शोध संक्षेप

साहित्य से संबंधित तथा तथ्य से सत्य तक पहुंचने की विशिष्ट प्रणाली को साहित्यिक शोध कहा जाता है। सामान्यतः शोध प्रविधि के बारे में जैसा कि माना जाता है शोध के उपकरण अपरिपक्व जानकारियों से उत्पन्न होते हैं। शोध का अर्थ उपलब्ध तथ्यों का संकलन परीक्षण एवं आकलन कर लेना ही नहीं है, बल्कि उसे तार्किक परिणति तक पहुंचाना भी है। प्रस्तुत शोध पत्र में साहित्यिक अनुसंधान पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

सामान्यतः जब सामान्य मनुष्य अनुसंधान की ओर प्रवृत्त होता है तो उसके विषय की विभिन्नतायें शोध की विभिन्नता से पृथक नहीं होती। शोघ के क्षेत्र में विभिन्नतायें हमेशा रहती हैं। यही भिन्नताएं शोद्यार्थी, शोध निदेशक को विषय चयन में सहायता करती हैं। उद्देश्य की दृष्टि से शोध के दो प्रकार होते हैं-1.सैद्धान्तिक शोध, 2. व्यावहारिक शोध। सैद्धान्तिक शोध के अन्तर्गत पहले से उपलब्ध तथ्यों के आधार पर एक सिद्धान्त गढ़ लिया जाता है जैसे यूनानी चिंतकों ने त्रासदी का सिद्धान्त गढ़ा और उसका उपयोग नाट्य शास्त्र एवं तदनन्तर साहित्य कला की अन्य विधाओं में भी इसे आकलन का आधार बनाया। किसी भी कृति में राजनीतिक, सामाजिक एवं साहित्यक एवं कलात्मक अध्ययन शोध का व्यावहारिक पक्ष होता है। किसी भी कृति की नवीन व्याख्या साहित्यिक शोध है और किसी कृतिकार की विकास यात्रा मे साहित्यिक शोध का विषय बन सकती है। किसी भी रचनाकार का विकास अपने समय और समाज के उन बिगड़ते प्रभावों से लड़ते हुये होता है जो इसे बनाते और बिगाड़ते हैं। उसका संदर्भ बिन्दु निजी-संकल्प और सामाजिक स्थितियों से धार पाता है। जैसे मनोहर श्याम जोशी रचनाकार के व्यक्तित्व और कृतित्व पर शोध किया जाये (वैसे यह विषय अन्य गैर महत्वपूर्ण रचनाकारों के संदर्भ में बहुत आम है) तो यह देखना होगा कि कैसे एक विज्ञान का विद्यार्थी अपनी साहित्याभिरूचि के चलते महान लेखक बन गया। प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री अमृतलाल नागर से उन्हें भाषा और कथाकार बनने की प्रेरणा सामने आई, लखनऊ ने उन्हें भाषिक संस्कार दिये, यशपाल ने उन्हें वैचारिक दृष्टि दी बौद्धिकता तो स्वतः स्फूर्त थी। इन सारे संस्कारों को अनुशासन दिया अज्ञेय जी ने। ऐसे जाने कितने संस्कारों अनुशासनों और गहन प्रभावों से जो बना वह महान साहित्यिक मनोहर श्याम जोशी थे। हर शब्द एक

बिंब है और रचनाकार उस बिंब को गहराई से पहचान ने की सामथ्र्य रखता है। रचनाकार सामथ्र्य रखने वाले कृतिकार पर शोध करने से निश्चित ही व्यवहारिक साहित्यिक शोध महत्वपूर्ण स्तर की होगी। तथ्यात्मक तथा व्याख्यात्मक शोध कला की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण हैं, क्यों कि इनके माध्यम से शोधार्थी अपने चिंतन को नई दृष्टि से अभिव्यक्ति देता है। कई बार तो ऐसा भी होता कि प्रयोगात्मक शोध भी कलापूर्ण माने जाते हैं। साहित्यिक शोध की सीमा में ऐतिहासिक एवं पौराणिक विषय भी बना सकते हैं जैसे वृदांवन लाल वर्मा के उपन्यासों मे ऐतिहासिक या पौराणिक संदर्भ और आधुनिक कथा साहित्य का सम्मिश्रण मिलता है।

साहित्यिक अनुसंधान

अनुसंधान के अनेक धरातल हो सकते हैं जैसे भाव तत्व संबंधी भाव संबंधी साहित्यिक शोध कविता कहानी उपन्यास नाटक, निबंध महाकाव्य आदि भाव जगत की विशिष्ट अवस्था से जन्म लेते हैं। इनमें लेखक के भावों, चिंतन, रसात्मक अभिव्यक्ति और अलौकिक आनंद की अनुभूति होती है। वैयक्तिक-निर्वैयक्तिक भावनाओं की अनुभूति जन्म अभिव्यक्ति भी साहित्यिक शोध का विषय है। राष्ट्रीय भावना एवं समाज संबंधी विषय भी अच्छे शोध के आधार हो सकते हैं। उपन्यासों में इधर उपर्युक्त आधार पर अनेक शोध कार्य हुये हैं। 2. कल्पना तत्वों को आधार रूप में ग्रहण कर भी शोध की विषय वस्तु बन जाती है। इस स्थिति में शोधार्थी समाज, धर्म, विज्ञान, नीति विज्ञान, मनोविज्ञान आदि विषयों पर शोध करने की ओर प्रवृत्त होता है। शोधकर्ता की दष्टि से देखा जाये तो वह कृति के ऐतिहासिक पौराणिक तत्वों के साथ सथा काल्पनिक तत्वों की पृथक-पृथक निष्पक्ष पड़ताल करता है। सामान्य जन इस पड़ताल से पृथक रूप से कोई सहमत हो या न हो, यह आवश्यक नहीं। दूसरी ओर अनुसंधानकर्ता भी अपने अनुसंधान से संतुष्ट नहीं होता यह बात भी स्मरणीय है। सफल शोधकृति साहित्य से इतर ज्ञान की भी मांग रखती है। विचारात्मक अनुसंधान किसी भी साहित्य की पृष्ठभूमि में सामान्यतः कोई विचारधारा अवश्य विद्यमान रहती है। किसी काव्यधारा के पीछे विद्यमान बुद्धिसंगत विश्लेषण होने से कृति का आकलन सुसंगत हो जाता है। जिस प्रकार कबीर की विचारधारा (डॉ.गोविन्द्र त्रिगुणायत) छायावादी काव्य की प्रांसगकिता और हिन्दी काव्य में निर्गुण संप्रदाय (डॉ.बड़थ्वाल) जैसी कृतियाँ उदाहरणार्थ दी जा सकती हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दी में दार्शनिक एवं अन्य सम्प्रदायों पर भी शोध प्रबंध लिखे गये हैं।

प्रवृत्ति प्रधान शोध

हिन्दी साहित्य में किसी साहित्य काल वाद को लेकर अनेक अनुसंधान किये गये हैं। ये दो प्रकार से हो सकते हैं। जैसे किसी रचनाकार की रचना प्रवृत्तियों को लेकर अनुसंधान या फिर किसी कालखंड की विशिष्टता को आधार रूप में ग्रहण कर शोध अध्ययन रचनाकार की काव्य प्रवृत्तियों का उदाहरण दिया जा सकता है। महादेवी वर्मा के काव्य में रहस्यवाद, 'कामायनी' का सौंदर्यशास्त्र अध्ययन आदि, कालप्रवृत्ति के अंतर्गत प्रगतिवाद परम्परा और प्रयोग छायावाद की प्रासंगिकता 'आदि। अभिव्यक्तिपरक शोध साहित्य का अनिवार्य उपकरण अभिव्यक्ति पक्ष है। इसे कलानुसंधान, भाषानुसंधान आदि में परिगणित किया जा सकता है। शैलीगत अध्ययन

के अंतर्गत किसी साहित्यिक कृति की अभिव्यक्ति का शैलीपरक आकलन तो किया ही जाता है साथ ही शब्द के विविध रूपों का प्रयोग किस किस रूप में हुआ है ? अनुसंधान में अभिव्यक्ति के अन्य उपकरणों का प्रयोग किस प्रकार किया गया है, इन सबका आकलन अभिव्यक्ति पक्ष के अंतर्गत किया जाता है। अनेक बार रचना की विधाओं को उनके परम्परागत ढांचे के अनुसार जानने की चेष्टा की जाती है तो अनेक बार आधुनिक और अप्रचलित निष्कर्ष भी अनुसंधान में अपनाये जाते हैं। जैसे उपन्यास कहानी एवं नाट्य विधा की अभिव्यक्ति के नवीन रूपाकार विकसित होते जा रहे हैं। आज इन विधाओं को परम्परा से चले आ रहे प्रतिमानों से परखना उसके साथ अन्याय करना होगा जैसे दीवार में एक खिड़की रहती थी, नौकर की कमीज़, कसप आदि उपन्यासों को एकदम नई आधुनातन दृष्टि से परखना समीचीन होगा। प्रसाद के नाटकों को आज के परिप्रेक्ष्य में जानना भी निश्चित ही अलग अनुभव होगा। तुलनात्मक शोध प्रविधि: तुलनात्मक शोध हमेशा से विश्व साहित्य में अभिव्यक्त मानवीय चेतना के अध्ययन से होता आया है। ज्ञान एवं अनुभूति के क्षेत्र में सर्वमान्य मान्यताओं को उभार कर एकता का सामन्जस्य पूर्ण उदाहरण तुलनात्मक शोध द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है।

तुलनात्मक शोध अनेक विधियों द्वारा किया जा सकता है जैसे काव्य कृतियों की भाषा का तुलनात्मक शोध, भाषानुसंधान संबंधी तुलनात्मक शोध, एक समयावधि की रचनाओं में तुलनात्मक अध्ययन का फिर समान विषय वस्तु संबंधी रचनाओं में तुलनात्मक शोध। उदाहरणार्थ राम काव्य का तुलनात्मक शोध आंचलिकता के आधारभूत उपन्यासों पर तुलनात्मक अनुसंधान या फिर भारत विभाजन पर लिखे गये उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन। ऐसे ढेर सारे अनुसंधान कराये जाने की संभावनायें हिन्दी क्षेत्र में बनती आई है।

चूंकि हिन्दी भाषा भारत की संपर्क भाषा है अतः इसमें तुलनात्मक अनुसंधान के द्वारा विकास के अवसर और भी प्राप्त हो सकते हैं। वर्तमान समय में एक से अधिक भाषाओं की जानकारी साहित्यिक उपलब्धि की दिशा में जितनी कारगर है उतनी ही राष्ट्रीय एकता को सबल बनाने में भी। अतः तुलनात्मक अनुसंधान इस दृष्टि से भी स्पृहणीय है।

संदर्भ

1 सहगल, डॉ.मनमोहन/हिन्दी शोध प्रविधि की रूपरेखा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर

2 शर्मा डॉ.एन.के.,शोध प्रविधि, केन्द्रीय हिन्दी शिक्षा संस्थान आगरा

3 सिंह विजयपाल, हिन्दी अनुसंधान